Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 8, Issue - 10, October - 2025

DOIs:10.2018/SS/202510011 --:-- Research Paper / Article / Review

अनूप सेठी की कविताओं में महानगरीय जीवन का चित्रण

डॉ. संतोष गायकवाड़
उपप्रचार्य एवं सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय,
शहापुर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
Email - gaikwad.santosh46@gmail.com

शोध सारांश: *अनूप सेठी की कविता आधुनिक मनुष्य की त्रासदी का सटीक चित्रण है। यह न केवल व्यक्तिगत अकेलेपन की बात करती है, बल्कि समग्र रूप से समाज की स्थिति का बोध भी कराती है। कवि ने एक गहन सामाजिक और दार्शनिक सत्य को बहुत ही संक्षिप्त ढंग से उद्घाटित किया है। यह कविता हमें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है - क्या हम सचमुच 'जी' रहे हैं या केवल 'जीवित' हैं? यही प्रश्न कविता का केंद्रीय बिंदु है, जो इसे कालजयी बनाता है। आधुनिक महानगरीय जीवन ने मनुष्य को भीड़ में भी अकेला जीने को विवश कर दिया है। मुंबई की भीड़-भाड़ में रहना किसी चुनौती से कम नहीं है। कोई भी इस बात की गारंटी नहीं दे सकता कि सुबह घर से निकला व्यक्ति शाम को सुरक्षित घर लौट आएगा। मुंबई में यातायात की समस्या केवल एक प्रशासनिक चुनौती नहीं, बल्कि एक सामाजिक वास्तविकता है। यह शहर जितना गतिशील है, उतनी ही बाधाओं से भी भरा है। बढ़ती सुविधाओं के बावजूद, जनसंख्या, विकास और यातायात के बीच संतुलन न बन पाने के कारण यह समस्या बनी हुई है।*

शब्द कुंजी: *महानगरीय जीवन, आधुनिकता, संवेदनहीनता, भौतिकता, सामाजिक अलगाव, आदि।*

1. प्रस्तावना:

आज के युग में महानगर आधुनिक विकास और प्रगति के प्रतीक बन गए हैं। ये शहर लाखों लोगों को रोज़गार, शिक्षा और बेहतर जीवन स्तर प्रदान करते हुए आकर्षण का केंद्र हैं। हालाँकि, इस उज्जवल तस्वीर के पीछे कई गहरी समस्याएँ छिपी हैं। महानगरीय जीवन अनेक चुनौतियों से भरा है जो लोगों के रहन-सहन और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। हालाँकि भारत में ग्रामीण आबादी बड़ी है, फिर भी शहरी संस्कृति का विकास हो रहा है। दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और कानपुर भारत के महानगरों में से हैं। महानगरों में जीवन और भी तेज़ गति वाला होता जा रहा है। जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है। ऐसे में लोगों में आंतरिक अशांति बढ़ रही है और उद्योगों को और अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। महानगरों में विभिन्न राजनीतिक उथल-पुथल बेरोकटोक जारी हैं।

हमारे देश के महानगरों में जीवन विविध जटिलताओं से भरा है। सबसे बड़ी समस्या निरंतर बढ़ती जनसंख्या है, जिसे अन्य समस्याओं का कारण कहा जा सकता है। लोग रोज़गार और समृद्धि की आशा में गाँवों से यहाँ आते हैं, लेकिन चूँकि माँग की तुलना में मानव संसाधन अधिक उपलब्ध हैं, इसलिए उन्हें बहुत कम वेतन मिलता है। परिणामस्वरूप, निम्न-आय वर्ग के लोगों का जीवन स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। इनमें से अधिकांश लोग महानगरों की मलिन बस्तियों में शरण लेने को विवश हो रहे हैं, जहाँ जीवन के लिए मूलभूत सुविधाओं का सर्वथा अभाव है। मलिन बस्तियों के विस्तार के कारण महानगरों में विभिन्न बीमारियाँ फैल रही हैं। प्रशासनिक तंत्र सभी लोगों को बिजली-पानी जैसी मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करने में लगातार असमर्थ होता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में महानगरों में जातिवाद और धार्मिक कट्टरता कम प्रचलित है, लेकिन रूढ़िवादिता अभी भी कायम है।

महानगरों में रहने वाले लोगों का जीवन बहुत व्यस्त होता है। शहर इतने व्यस्त होते हैं कि वे अपनों के लिए समय नहीं निकाल पाते और इसके बजाय सोशल मीडिया, मैसेजिंग और अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। परिणामस्वरूप, वे समाज से कट जाते हैं। शहरी जीवन का विरोधाभास यह है कि भौतिक सुख-सुविधाओं के बावजूद, लोगों में अपनेपन की गहरी भावना नहीं होती। ज़्यादातर शहरवासी स्वार्थी हो जाते हैं और अपने अलावा किसी की परवाह नहीं करते। अमीर लोग जीवन के सुख-सुविधाओं का आनंद लेते हैं, जबकि आम लोग और गरीब लोग इसके दुष्परिणाम भुगतते हैं।

महानगरीय परिवेश में मानव एक यांत्रिक मशीन बनता जा रहा है। गाँवों में जो आत्मीयता, सहानुभूति, अपनापन और प्रेम था, वही शहरों में पहुँचकर अजनबीपन, अकेलेपन, घृणा और असंवेदनशीलता के रूप में प्रकट होता है। महानगरीय जीवन का सबसे बड़ा संकट मनुष्य धीरे-धीरे अमानवीय हो रहा है। सभी रिश्तों का खुलेआम व्यवसायीकरण होता जा रहा है। पूँजीवादी

सामाजिक व्यवस्था समाज में रहने वाले व्यक्तियों को असामाजिक, क्रूर, स्वार्थी, धूर्त और असुरक्षित बनाती है। यह भयावह अभिव्यक्ति महानगरीय क्षेत्रों में विशेष रूप से दिखाई देती है। इस प्रकार, विकास की इस दौड़ में महानगरीय लोगों का जीवन संकटों से घिरा हुआ है। धन की चाह में, पारिवारिक रिश्ते झूठे और अर्थहीन लगने लगते हैं। महानगरीय परिवेश में आत्म-केंद्रितता की भावना ने लोगों को इतना स्वार्थी बना दिया है कि सभी पारिवारिक और सामाजिक हित गौण हो गए हैं और उनके अपने हित सर्वोपरि हैं। वे अपने स्वार्थ के लिए सभी रिश्तों को नज़रअंदाज़ करने में संकोच नहीं करते। महानगरीय परिवेश में इस तरह के स्वार्थ, व्यक्तिवाद, अविश्वास और असंवेदनशीलता ने नैतिक मूल्यों का क्षरण किया है। महानगरीय चेतना वह धारणा है कि महानगरीय वातावरण अपने निवासियों के जीवन और विमर्श को इस हद तक प्रभावित करता है कि वह संघर्ष, संकट और चिंता पैदा करता है। कुल मिलाकर, यह एक नैतिक उथल-पुथल पैदा करता है, जिसमें जीवन का हर पल संघर्ष से भर जाता है। स्पष्टतः महानगरीय जीवन मानव जीवन में एक ऐसा परिवर्तन है जो उसे संघर्ष से भर देता है। भौतिकवाद की इस दौड़ में मनुष्य अपनी मानवीयता त्यागकर मशीन बन गया है। चकाचौंध से भरा महानगरीय दृश्य सभी को आकर्षित करता है। लेकिन इस आकर्षण के पीछे छिपे अंधेरे को नजरअंदाज करते हुए, लोग अपनी परंपराओं और परिवेश को तोड़ते हुए, रोजगार की तलाश में तेजी से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे शहरी आबादी में वृद्धि हुई है। जनसंख्या में इस वृद्धि के कारण महानगरीय शहरों में बेरोजगारी, प्रदूषण, महंगाई, गंदगी, यातायात और भीड़भाड़ जैसी विभिन्न समस्याएं पैदा हुई हैं। इन नकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ, महानगरीय वातावरण और इसका निरंतर विस्तार संयुक्त परिवारों को तोड़ रहा है। हमारी सदियों पुरानी सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों को खंडित किया है। महानगरीय वातावरण से प्रभावित मानव व्यवहार में एक अजीब-सी व्यावसायिकता स्पष्ट हो रही है। रिश्तों में मिठास नहीं रही, पारिवारिक कलह है, एकता और आत्मीयता के बंधन पूरी तरह टूट चुके हैं। यहाँ तक कि खून के रिश्ते भी टूटने लगे हैं, और माता-पिता, पिता, बेटी और भाई-बहनों के बीच एक धुंधली सी खाई उभर आई है।

अनूप सेठी की कविताएँ पिछले दो दशकों से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। अनूप सेठी ने समकालीन अनुभव की दुनिया को अनोखे ढंग से उकेरा है। विकास प्रक्रिया के विरोधाभास, अपनी जड़ों से विमुख होने की विडंबना और स्मृतियाँ उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय हैं। ये कविताएँ एक ओर पहाड़ी इलाकों, पीछे छूटे लोक जीवन का चित्रण करती हैं, लेकिन स्मृतियों की ओर लौटने से कोई सांत्वना या सुकून नहीं मिलता। दूसरी ओर, महानगरीय परिवेश है जो अपनी पूरी अराजकता में हमें घेरे हुए है। अनूप की कविताओं में, स्थानीयता और समय विशेष पात्रों के रूप में उभरते हैं, जो उन्हें अनुभव के एक नए, जैविक रूप में रचने के लिए प्रेरित करते हैं। ये कविताएँ औसत समय की दूरी में झाँकती हैं, साधारण और असहनीय रोज़मर्रा की ज़िंदगी का सामना करती हैं, और अमूर्त को देखने का प्रयास करती हैं। इन कविताओं में विचार बाहरी रूप से थोपे नहीं जाते। ये कविताएँ हमें एहसास कराती हैं कि छोटी-छोटी चीज़ों और अनजान घटनाओं से रचे-बसे मानव जीवन की लय एक अमानवीय व्यवस्था की गिरफ़्त में है। इसी स्थिरता, निष्क्रियता और यांत्रिक जीवन के बीच जीवित मनुष्यों की आकांक्षाओं और धड़कनों को पढ़ा जा सकता है। ये कविताएँ दृश्यों और वस्तुओं के वर्णन और ब्योरे में अपनी जगह पाती हैं। इन कविताओं का दृश्य अभिलेख सामूहिक स्मृति में कैद समय का एक रूप रचता है। कहने की ज़रूरत नहीं कि परिचित को फिर से जानने और उसके आंतरिक अर्थ को फिर से खोजने की यह चाहत हमारे समय में रचनात्मक कार्यों का एक नया तर्क गढ़ती है, जो विस्मरण और संशोधन की संस्कृति से ओतप्रोत है। अनूप सेठी की पैनी दृष्टि वस्तुओं को एक नए रूप में देखती है। ये कविताएँ हास्य, व्यंग्य, विडंबना और व्यंग्य के औज़ारों का भी इस्तेमाल करती हैं।

अनूप सेठी की कविता 'खिड़कियाँ' इमारत और कोने के प्रतीकों का उपयोग करके मानवता के खोए हुए आत्मबोध और अस्तित्व के दर्द को उजागर करती है। आधुनिक युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण ने मनुष्य को भौतिक सुख-सुविधाएँ तो दी हैं, लेकिन साथ ही गहरे मनोवैज्ञानिक अकेलेपन और संवेदनहीनता को भी जन्म दिया है। प्रस्तुत कविता —

"मैं एक बड़े इमारती शहर की
एक छोटी इमारत की
किसी एक मंज़िल के
किसी एक कोने में रहता हूँ
जैसे कई कोनों में कई लोग रहते हैं"[१]

आधुनिक जीवन की इसी विडंबना को अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक ढंग से व्यक्त करती है। इन पंक्तियों में कवि शहर, इमारत और कोने के प्रतीकों के माध्यम से मनुष्य के खोये हुए आत्मबोध और अस्तित्व की पीड़ा को उजागर करता है। आधुनिक महानगरीय जीवन ने मनुष्य को भीड़ में भी अकेला छोड़ दिया है। यह कविता आधुनिक मनुष्य की त्रासदी का सटीक चित्रण है। यह न केवल व्यक्तिगत अकेलेपन की बात करती है, बल्कि समग्र रूप से समाज की स्थिति का बोध भी कराती है। कवि ने एक गहन सामाजिक और दार्शनिक सत्य को बहुत ही संक्षिप्त ढंग से उद्घाटित किया है। यह कविता हमें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है - क्या हम सचमुच 'जी' रहे हैं या केवल 'जीवित' हैं? यही प्रश्न कविता का केंद्रीय बिंदु है, जो इसे कालजयी बनाता है। मुंबई की भीड़-भाड़ में रहना किसी चुनौती से कम नहीं है। कोई भी इस बात की गारंटी नहीं दे सकता कि सुबह घर से निकला व्यक्ति शाम को सुरक्षित घर लौट आएगा। मुंबई में यातायात की समस्या केवल एक प्रशासनिक चुनौती नहीं, बल्कि एक सामाजिक वास्तविकता है। यह शहर

जितना गतिशील है, उतनी ही बाधाओं से भी भरा है। बढ़ती सुविधाओं के बावजूद, जनसंख्या, विकास और यातायात के बीच संतुलन न बन पाने के कारण यह समस्या बनी हुई है। यहाँ सार्वजनिक बसों और ट्रेनों में सुरक्षित यात्रा करना अपने आप में एक चुनौती है । अनूप सेठी की 'बंबई दर्शन' कविता इसका जीवंत उदाहरण है-

"जैसे ही अपनी बस दिखी
आक्रामक तन गए हाथ पांव
संकरे दरवाजे में
लोगों के सिरों बाहों थैलों के बीच
घुसेड़ दिया सिर नेवले की तरह
कई लोग पीछे थे गिरने से बचाने को"[२]

जिस तरह मुंबई की बसें खचाखच भरी होती हैं, उसी तरह मुंबई की रेलवे में भी अक्सर भीड़ अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है। मुंबई महानगरीय क्षेत्र का एक भी रेलवे स्टेशन ऐसा नहीं है जहाँ भीड़ न हो। सुबह हो या शाम, प्लेटफॉर्म हमेशा भीड़ से भरे रहते हैं। 'चर्चगेट का प्लैटफार्म' कविता में अनूप सेठी जी ने चर्चगेट के खचाखच भरे प्लैटफार्म का यथार्थ चित्रण किया है-

"शाम का समय जब प्लैटफार्म बहुत व्यस्त होता है
ढलती धूप के चौकोर टुकड़े
पैरों से खचाखच भरते जाते हैं
रीत जाते हैं फिर भर जाते हैं"[३]

दो-दो मिनट में लोगों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है और स्टेशन फिर से भर जाता है-

"दो-दो मिनट में लोगों का रेला आता है
दनदनाता धकियाता
छूटा आसपास
गुजर जाता है"[४]

सेठी जी ने महानगरीय कार्यालयों में वर्षों से काम कर रहे कर्मचारियों के जीवन का भी खूबसूरती से चित्रण किया है। वर्षों से साथ काम करने के बावजूद, हर कर्मचारी अकेलापन महसूस करता है। इस महानगर की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में, हर किसी को एक मशीन की तरह जीना पड़ता है। घड़ी के साथ दौड़ते हुए, उनके लिए हर मिनट महत्वपूर्ण है। 'ठसाठस' कविता में कवि अनूप सेठी इसी यथार्थ को उजागर करते हैं-

"घड़ी आज भी बाजा रही है साढ़े चार
यूं शायद बज चुके है पौने पांच
दफ्तरों में हर कोई व्यस्त है अपने लद्धड़पन के बावजूद
बीसियों बरसों से
खड़े-खड़े कुढ़ने तक की नहीं है सोहबत"[५]

इस प्रकार, अनूप सेठी की कविता न केवल महानगरीय जीवन की आलोचना करती है, बल्कि मानवीय संवेदनशीलता की पुनर्स्थापना का आह्वान भी करती है। आधुनिक हिंदी कविता का स्वर अब प्रकृति, प्रेम या राष्ट्रवाद तक सीमित नहीं रहा। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, महानगरीय जीवन और मानवता की आंतरिक शून्यता जैसे विषयों ने हिंदी कविता में महत्व प्राप्त किया है। शहर अब सभ्यता की नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व की कसौटी है। कभी समाज के प्रवक्ता रहे कवि अब उसी समाज में अजनबी हो गए हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में, महानगरों ने आधुनिकता, शिक्षा और स्वतंत्रता की नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। इन संभावनाओं के केंद्र में आज की कामकाजी महिलाएँ हैं – जो घर के अंदर और बाहर, दोनों जगह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महानगरों में महिलाएँ अब केवल गृहिणी तक ही सीमित नहीं हैं; वे प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा, सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, मीडिया और व्यवसाय जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं। हालाँकि, इस आकर्षक आधुनिक जीवन के पीछे एक चुनौतीपूर्ण

वास्तविकता छिपी है – जहाँ महिलाओं को अनेक सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। 'हमारे शहर की स्त्रियाँ' कविता में महानगर की कामकाजी महिलाओं का चित्रण करते हुए अनूप सेठी लिखते हैं-

"एक साथ कई स्त्रियाँ बस में चढ़ती है
एक हाथ में संतुलन बनाए
एक हाथ में रुपए का सिक्का थामे
बिना धक्का खाए काम पर पहुँचना है उन्हें
दिन भर जूते रहना है उन्हें
टाइप मशीन पर, फाइलों में"[६]

महानगरों में जीवन तेज़-तर्रार, प्रतिस्पर्धी और तनावपूर्ण है। यहाँ हर कोई समय के साथ दौड़ रहा है। ऐसे माहौल में, महिलाओं को अपनी पेशेवर ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है। वे एक साथ बेटी, पत्नी, माँ, कर्मचारी और नागरिक की भूमिकाएँ निभाती हैं। महानगरों में, महिलाएँ अब सहायक नहीं, बल्कि समान भागीदार हैं। लेकिन इस समानता की यात्रा आसान नहीं रही है - सामाजिक मानसिकता, कार्यस्थल पर असमानता और घर की दोहरी ज़िम्मेदारियों ने इसे और कठिन बना दिया है-

"बंद घरों में बत्तियाँ जले रहने तक डटे रहना है
अंधेरे में और सपने में खटना है
नल के साथ जगना है हर जगह खुद को भरना है
चल पड़ना है एक हाथ से संतुलन बनाए"[७]

महानगरीय महिलाओं के जीवन का यह सबसे कठिन पहलू है। सुबह घर के काम, बच्चों की देखभाल, फिर ऑफिस का दबाव और शाम को फिर से घर के काम - यह दोहरी भूमिका थकान और मानसिक तनाव का कारण बनती है। इसके बावजूद, कई महिलाएं जीवन में संतुलन बनाए रखने में कामयाब हो रही हैं। महानगरीय जीवन में सफलता की दौड़ ने महिलाओं के जीवन में तनाव और अकेलापन पैदा कर दिया है। घर और ऑफिस के बीच संतुलन बनाने में समय की कमी हो जाती है, जिसका असर उनके निजी जीवन पर पड़ता है। कई बार परिवार या समाज से अपेक्षित सहयोग न मिलने के कारण महिलाएं मानसिक रूप से थका हुआ महसूस करती हैं।

2. निष्कर्ष:

अनूप सेठी ने समकालीन अनुभव की दुनिया को अनोखे ढंग से उकेरा है। विकास प्रक्रिया के विरोधाभास, जड़ों से दूर होने की विडंबनाएँ और स्मृतियाँ उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय हैं। एक ओर, ये कविताएँ पहाड़ी इलाकों और पीछे छूट गए लोगों के जीवन को चित्रित करती हैं, लेकिन स्मृतियों की ओर लौटने से कोई राहत या सांत्वना नहीं मिलती। दूसरी ओर, महानगरीय परिवेश हमारे चारों ओर अस्त-व्यस्त है। महानगर में जीवन तेज़-तर्रार और बेहद तनावपूर्ण होता है। कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि मुंबई जैसे महानगर को चित्रित करने में अनूप सेठी ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। शहरों की भागदौड़, जीवनयापन के लिए संघर्षरत लोग, परिवहन सुविधाओं पर बढ़ती आबादी का दबाव और कामकाजी महिलाओं की पीड़ा और लाचारी को सेठी ने पूरी ईमानदारी से चित्रित किया है।

संदर्भ सूची:

१. सेठी, अनूप (२००२) जगत में मेला, (पृ. ८१) हरियाणा, आधार प्रकाशन
२. वही, पृ. ८३-८४
३. वही, पृ. ८५
४. वही, पृ. ८५
५. वही, पृ. ९२
६. वही, पृ. ९३
७. वही, पृ. ९४